International Journal of Global Multidisciplinary Research and Analytics
IJGMRA | ISSN (Online): 3107-6483
October-December 2025 | Vol. 01 | Issue 3
Website: www.thearyapublication.com

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों हेतु कला आधारित अधिगम का अध्ययन: राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020

राजन पटेल*

*शोधार्थी, शिक्षा विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर, भारत
ईमेल : rajanrajbhu905@gmail.com

DOI: doi.org/10.5281/zenodo.18207148
Accepted on: 31/12/2025 Published on: 10/01/2026

सारांश:

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 सामाजिक शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए कई नीतिगत सुधारों की वकालत करती है। इसमें विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (सी डब्ल्यू एस एन) के लिए कला-आधारित अधिगम (ए बी एल) की महत्वपूर्ण भूमिका सामने आई है। हम कला को अपने स्टार्टअप अभ्यासों में शामिल करने के लिए और स्कूल के हितधारकों के लिए मूल्यवान सुझाव भी प्रस्तुत करते हैं। इसमें इंस्टीट्यूट को प्रशिक्षण प्रदान करना, विभिन्न प्रकार की कलाओं का स्वागत करने वाली कक्षाओं में निर्माण या सीखने के अनुभव को बढ़ाने के लिए कलाकारों के साथ सहयोग करना शामिल हो सकता है। इन सुझावों को लागू करके, हम एक ऐसा रंगीन बनाया जा सकता है जिसे मैं और सभी छात्र, विशेष रूप से विशेष आवश्यकता वाले छात्रों को शैक्षिक और जीवन दोनों में सफलता प्राप्त करने में सहायता करते हैं। कला में बच्चों को स्वयं को अभिव्यक्त करने का एक अनोखा तरीका प्रदान किया जाता है, जिससे वे अपने विचारों और भावनाओं को आत्मसात करके उन पर विश्वास कर सकते हैं जिनमें पारंपरिक पाठ्य नहीं हो सकते। यह शोध पत्र इस बात की जांच करता है कि कला आधारित अधिगम विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के प्रशिक्षण, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास में कैसे सहायक हो सकता है।

मुख्य शब्द : *कला-आधारित अधिगम, विशेष शिक्षा, राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020, समावेशी शिक्षा.*

प्रस्तावना:

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की व्यापक दृष्टिकोण है, जो एक समग्र, शिक्षार्थी-केंद्रित दृष्टिकोण की वकालत करता है जो सभी छात्रों की जरूरतों के प्रति उत्तरदायी है, शिक्षा में समानता और समावेशिता पर जोर देता है। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए कला-आधारित अधिगम एक अभिनव शैक्षिक दृष्टिकोण है जो सीखने और

विकास को बढ़ाने के लिए कला की शक्ति का उपयोग करता है। यह विधि न केवल रचनात्मकता और आत्म-अभिव्यक्ति को उत्तेजित करती है बल्कि संचार और जुड़ाव के लिए वैकल्पिक अवसर प्रदान करके विभिन्न सीखने की चुनौतियों का भी समाधान करती है। कला-आधारित अधिगम द्वारा संज्ञानात्मक, भावनात्मक और सामाजिक विकास को बढ़ावा देकर विशेष जरूरतों वाले बच्चों को काफी लाभ पहुंचाता है। कला के माध्यम से, ये बच्चे अधिक स्पर्शनीय और दृश्य तरीके से अवधारणाओं का पता लगा सकते हैं, जो विविध शिक्षण शैलियों और जरूरतों के साथ अच्छी तरह से संरेखित होता है। इसके अतिरिक्त, पाठ्यक्रम में कला को एकीकृत करना एक समावेशी वातावरण को बढ़ावा देता है, जहां मतभेदों को अस्वीकृत किया जाता है, और सभी छात्रों को अपनी शैक्षिक यात्रा में पूरी तरह से भाग लेने का अवसर मिलता है। मानव जीवन में कला का महत्व बहुत अधिक है और इसे कम करके नहीं आंका जा सकता। कला हमारे गहरे विचारों, भावनाओं और मानसिक स्थितियों को व्यक्त करने के लिए एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में कार्य करती है, जिसे अकेले शब्द अक्सर व्यक्त नहीं कर सकते। जबकि 'कला' रचनात्मक रूपों की एक विस्तृत श्रृंखला को शामिल करती है, यह लेख विशेष रूप से दृश्य कलाओं को उजागर करेगा, जिसमें पेंटिंग, चित्र और मूर्तियां शामिल हैं। ये कलात्मक रचनाएँ न केवल कलाकार के दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करती हैं, बल्कि विभिन्न स्तरों पर दर्शकों के साथ भी जुड़ती हैं, जिससे मानवीय अनुभव की हमारी समझ बढ़ती है। दृश्य कलाओं के माध्यम से, हम जटिल विषयों पर गहराई से विचार कर सकते हैं, सामाजिक परंपराओं पर सवाल उठा सकते हैं और मौखिक संचार से परे संबंध स्थापित कर सकते हैं। इसलिए, कला न केवल महत्वपूर्ण है; यह व्यक्तिगत अभिव्यक्ति, सांस्कृतिक पहचान और भावनात्मक संबंधों के लिए महत्वपूर्ण है **(पूथेनेदं. आर. 2020)** |

बच्चों की अपने आस-पास की दुनिया को समझने और छोटी अवस्था में भी खुद को अभिव्यक्त करने की क्षमता में कला की भूमिका को अच्छी तरह से प्रलेखित किया गया है। ऐसा होने के कारण, यह अफ़सोस की बात है कि हमारे स्कूली पाठ्यक्रम कला वर्ग को पाठ्यक्रम का एक महत्वपूर्ण पहलू मानने के बजाय एक अपरिहार्य अतिरिक्त, लगभग एक व्यय करने योग्य वर्ग मानते हैं। अधिकांश हाई स्कूलों में ड्राइंग के लिए एक घंटा और कार्य अनुभव के लिए एक घंटा निर्धारित होता है, जहां किसी प्रकार की शिल्पकला सीखी जाती है। प्राथमिक विद्यालयों में अनिवार्य एक घंटे के अलावा ड्राइंग का एक और घंटा हो सकता है। कई बार गणित और विज्ञान जैसे तथाकथित मुख्य विषयों में प्रशिक्षण की पेशकश की वेदी पर सबसे पहले इन कक्षाओं की बलि चढ़ा दी जाती है। कला का शिक्षण कई तरह

से बाधित है। इसे मुख्य रूप से वैकल्पिक माना जाता है और कई बार बिना किसी जवाबदेही के इसे अपनाया जाता है (अश्वार्थ, 2010)|

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए समावेशी और समान अवसर प्रदान करने पर बल देती है, जिसमें कला-आधारित अधिगम (Art-Integrated Learning) एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह शिक्षण पद्धति विशेष बच्चों की संज्ञानात्मक, सामाजिक और भावनात्मक क्षमताओं को विकसित करने में सहायक होती है। संगीत, नृत्य, नाटक, चित्रकला और हस्तकला जैसी कलात्मक गतिविधियाँ इन बच्चों के लिए सीखने की प्रक्रिया को अधिक सहज, अभिव्यक्तिपूर्ण और प्रभावी बनाती हैं। NEP 2020 विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए व्यक्तिगत शिक्षण योजनाओं (IEP) में कला-आधारित अधिगम को सम्मिलित करने की सिफारिश करती है, ताकि उनकी विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके। यह नीति विशेष शिक्षकों और मुख्यधारा के शिक्षकों को इस दिशा में प्रशिक्षित करने पर भी बल देती है, जिससे शिक्षा अधिक समावेशी और बहु-संवेदी बन सके। इस प्रकार, NEP 2020 विशेष बच्चों के लिए कला को एक सशक्त शिक्षण साधन के रूप में मान्यता देती है।

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए कला आधारित अधिगम:

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए कला आधारित अधिगम **(Art-Based Learning, ABL)** विभिन्न प्रकार की कलाओं को शामिल करता है, जो उनके शैक्षिक, सामाजिक, भावनात्मक और संज्ञानात्मक विकास में सहायता करती हैं। कुछ प्रमुख कला आधारित शिक्षण विधियाँ निम्नलिखित हैं:

1. **दृश्य कला (Visual Arts)**

विशेष जरूरतों वाले बच्चों के लिए, स्कूल में कला होना महत्वपूर्ण है क्योंकि यह उन्हें कई तरीकों से बढ़ने में मदद करता है - शैक्षणिक, सामाजिक और भावनात्मक रूप से। जब शिक्षक सीखने में कला को शामिल करते हैं, तो यह सभी के लिए एक स्वागत योग्य स्थान बनाता है, जिससे सभी बच्चे अपनी अनूठी प्रतिभा दिखा सकते हैं। कला बनाने से बच्चों के दिमाग का विकास भी होता है और उनका ध्यान बेहतर होता है। कला बनाना बच्चों को बेहतर सोचने और अधिक ध्यान केंद्रित करने में भी मदद करता है **(Puthenedam, 2023)**। जब वे कला परियोजनाओं पर काम करते हैं, तो वे निर्णय लेना, चीजों की योजना बनाना और अपने विचारों को जीवन में उतारना सीखते हैं।

विभिन्न प्रकार की कलाओं को आजमाने से दुनिया के बारे में उनकी जिज्ञासा बढ़ सकती है। कला परियोजनाओं पर एक साथ काम करने से उन्हें दूसरों के साथ संवाद करना और काम करना सिखाया जाता है, जो दोस्त बनाने और साथ मिलकर काम करने के लिए महत्वपूर्ण है। साथ ही, कला में चित्रों और दृश्यों का उपयोग पढ़ने और गणित में मदद कर सकता है, जिससे समस्याओं को समझना और हल करना आसान हो जाता है। कुल मिलाकर, कला बनाना बच्चों को गंभीरता से सोचने और रचनात्मक होने में मदद करता है| जैसे -

- **चित्रकला (Drawing & Painting):** रंगों और रेखाओं के माध्यम से भावनाओं और विचारों को व्यक्त करने में मदद करता है।
- **मूर्तिकला (Sculpting):** हाथों से गढ़ने वाली गतिविधियाँ स्पर्श और मोटर कौशल विकसित करती हैं।
- **कोलाज एवं क्राफ्ट (Collage & Craft):** कागज, मिट्टी, कपड़े आदि से बनी वस्तुएँ बच्चों में रचनात्मकता बढ़ाती हैं।

2. **संगीत (Music)**

संगीत बच्चों को कई तरह से सीखने और बढ़ने में मदद करता है, खासकर उन बच्चों के लिए जिनकी विशेष जरूरतें हैं। जब बच्चे संगीत सुनते हैं या बनाते हैं, तो यह उन्हें स्कूल में बेहतर प्रदर्शन करने (अका दमिक), दोस्त बनाने और दूसरों के साथ काम करने (सामाजिक), उनकी भावनाओं को महसूस करने और उन्हें समझ ने (भावनात्मक), और बेहतर सोचने और समस्याओं को हल करने (संज्ञानात्मक) में मदद कर सकता है। तो, संगीत ए क विशेष उपकरण की तरह है जो बच्चों को कई महत्वपूर्ण क्षेत्रों में मदद करता है। जैसे

- **गायन (Singing):** उच्चारण सुधारने और भाषा कौशल विकसित करने में सहायक।
- **वाद्य यंत्र बजाना (Playing Instruments):** संज्ञानात्मक विकास और हाथ-आँख समन्वय को बेहतर करता है।
- **संगीत चिकित्सा (Music Therapy):** विशेष रूप से ऑटिज़्म और संज्ञानात्मक विकार वाले बच्चों के लिए प्रभावी।

3. **नृत्य और नाट्य कला (Dance & Drama)** कला-आधारित शिक्षा में नृत्य और नाटक का समावेश न केवल विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के शैक्षिक अनुभव को समृद्ध करता है, बल्कि समावेशिता और व्यक्तिगत विकास को भी प्रोत्साहित करता है, जिससे उनके समग्र विकास के लिए एक अधिक प्रभावी और व्यापक दृष्टिकोण स्थापित करने में सहायता मिलती है।

- **नृत्य (Dance):** शारीरिक गतिविधि के साथ लयबद्धता, अनुशासन और भावनात्मक अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करता है।
- **रंगमंच (Drama & Role Play):** आत्मविश्वास, संचार कौशल और सामाजिक सहभागिता को बढ़ाने में सहायक।
- **माइम एवं पपेट्री (Mime & Puppetry):** संकेतों और अभिनय के माध्यम से समझने और व्यक्त करने की क्षमता विकसित करता है।

4. **साहित्य और रचनात्मक लेखन (Literature & Creative Writing)**

साहित्य और रचनात्मक लेखन विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के लिए कला-आधारित शिक्षा को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अभिव्यक्ति के ये रूप जुड़ाव के लिए अद्वितीय अवसर प्रदान करते हैं, जिससे बच्चों को एक सहायक वातावरण में अपनी भावनाओं और विचारों का पता लगाने की अनुमति मिलती है। कहानी सुनाने और रचनात्मक गतिविधियों के माध्यम से, बच्चे अपने संचार कौशल में सुधार कर सकते हैं, अपने आत्मविश्वास को बढ़ा सकते हैं और सामाजिक संबंधों को बढ़ावा दे सकते हैं, जो सभी उनके समग्र विकास में योगदान करते हैं। इसके अतिरिक्त, साहित्य विविध दृष्टिकोणों को समझने, सहानुभूति को बढ़ावा देने और कल्पनाशील सोच को प्रोत्साहित करने के लिए एक उपकरण के रूप में काम कर सकता है, जो समग्र सीखने के अनुभवों के लिए आवश्यक हैं।

- **कहानी सुनाना (Storytelling):** श्रवण कौशल और कल्पनाशीलता को विकसित करता है।
- **कविता लेखन (Poetry Writing):** आत्म-अभिव्यक्ति के लिए महत्वपूर्ण उपकरण।
- **निबंध और लघु कहानियाँ (Essay & Short Story Writing):** भाषा और संज्ञानात्मक कौशल में सुधार करता है।

5. डिजिटल और मीडिया कला (Digital & Media Arts)

डिजिटल और मीडिया कलाएँ विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के लिए कला-आधारित अधिगम को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, जो विभिन्न शिक्षण शैलियों को पूरा करने वाले अभिनव उपकरण और तरीके प्रदान करती हैं। ये प्रौद्योगिकियाँ रचनात्मक अभिव्यक्ति को सुविधाजनक बनाती हैं, जिससे बच्चों को एक सहायक वातावरण में अपनी कलात्मक क्षमताओं का पता लगाने में सहायक हो सकें| डिजिटल मीडिया को शैक्षिक प्रथाओं में एकीकृत करके, शिक्षक व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुरूप अनुभव बना सकते हैं, जो अंततः इन बच्चों में व्यक्तिगत विकास और विकास को बढ़ावा देते हैं।

डिजिटल चित्रकला (Digital Drawing & Designing): कंप्यूटर और टैबलेट का उपयोग करके दृश्य कौशल विकसित करना।

फोटोग्राफी और फिल्म निर्माण (Photography & Filmmaking): संचार और दृष्टिकोण को मजबूत करता है।

एनिमेशन एवं ग्राफिक डिजाइन (Animation & Graphic Design): बच्चों के लिए आकर्षक एवं रचनात्मक गतिविधियाँ।

6. योग एवं ध्यान (Yoga & Mindfulness Activities)

माइंडफुलनेस ड्रॉइंग (Mindfulness Drawing): ध्यान केंद्रित करने और मानसिक संतुलन बनाए रखने में सहायक।

कला आधारित अधिगम का महत्व:

कला-आधारित शिक्षण (ABL) दृश्य कला, संगीत, नृत्य, रंगमंच और हस्तशिल्प जैसी विभिन्न विधाओं का उपयोग करके बच्चों के लिए अधिगम को सहज और आकर्षक बनाता है। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए, ABL निम्नलिखित तरीकों से लाभकारी हो सकता है:

1. **संज्ञानात्मक विकास:** चित्रकला और मूर्तिकला जैसी गतिविधियाँ बच्चों की सोचने और समस्या हल करने की क्षमता को बढ़ाती हैं (Eisner, 2002)।

2. **मनोवैज्ञानिक एवं भावनात्मक लाभ:** संगीत और नृत्य से बच्चों में आत्म-अभिव्यक्ति की क्षमता बढ़ती है, जिससे उनका आत्मविश्वास विकसित होता है (Winner, Goldstein, & Vincent-Lancrin, 2013)।

3. **समाजिक सहभागिता:** समूह आधारित कला गतिविधियाँ विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को उनके साथियों के साथ जुड़ने में मदद करती हैं, जिससे उनकी संचार एवं सहभागिता क्षमता में सुधार होता है **(हल्लम, 2010)।**

4. **समावेशी शिक्षा का समर्थन:** प्रत्येक बच्चे की सीखने की शैली को समझकर उसे उपयुक्त शिक्षण पद्धति प्रदान करना (MHRD, 2020)।

5. **अध्यापकों का प्रशिक्षण:** विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को पढ़ाने के लिए शिक्षकों को कला आधारित शिक्षण की विधियों में प्रशिक्षित किया जाना चाहिए **(NCERT, 2021)।**

6. **सहायक संसाधनों का विकास:** डिजिटल संसाधनों और सहायक तकनीकों का उपयोग कला आधारित अधिगम को प्रभावी बनाने में मदद कर सकता है।

चुनौतियाँ और कार्यान्वयन रणनीतियाँ:

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए कला-आधारित अधिगम कई चुनौतियों का सामना करता है, जिनका समाधान आवश्यक संसाधनों, प्रशिक्षित शिक्षकों और समावेशी नीतियों के माध्यम से किया जा सकता है। प्रमुख चुनौतियों में संसाधनों की कमी, उपयुक्त शिक्षण सामग्री और प्रशिक्षित शिक्षकों का अभाव शामिल है, जिससे बच्चों की विविध आवश्यकताओं को पूरा करना कठिन हो जाता है। इसके अलावा, डिजिटल और तकनीकी संसाधनों की सीमित उपलब्धता, जैसे ऑडियो-विजुअल सामग्री, ब्रेल-सक्षम संसाधन और विशेष सॉफ्टवेयर, भी एक प्रमुख बाधा है। समाज में कला-आधारित शिक्षा को पारंपरिक शिक्षण की तुलना में कम प्रभावी मानने की प्रवृत्ति इसे व्यापक रूप से अपनाने में कठिनाई उत्पन्न करती है। साथ ही, कला-आधारित अधिगम के परिणामों का सही मूल्यांकन पारंपरिक परीक्षा पद्धतियों से करना चुनौतीपूर्ण होता है। इन बाधाओं को दूर करने के लिए प्रभावी

नीतियों, संसाधनों की समुचित उपलब्धता और शिक्षकों के प्रशिक्षण की आवश्यकता है, जिससे यह शिक्षा प्रणाली अधिक समावेशी और प्रभावी बन सके।

निष्कर्ष:

कला आधारित अधिगम विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए एक प्रभावी शिक्षण रणनीति है, जो उनके संज्ञानात्मक, सामाजिक, भाषाई और भावनात्मक विकास को समग्र रूप से बढ़ावा देती है। NEP 2020 के अनुसार, इस दृष्टिकोण को विशेष शिक्षा में अधिक समाहित करने की आवश्यकता है ताकि शिक्षा अधिक समावेशी, आनंददायक और प्रभावी बन सके। यह पद्धति न केवल उनके शैक्षिक प्रदर्शन को सुधारने में सहायक होती है, बल्कि आत्म-अभिव्यक्ति, आत्मविश्वास और रचनात्मकता को भी प्रोत्साहित करती है। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए कला आधारित अधिगम उनकी सीखने की शैली के अनुरूप एक वैकल्पिक माध्यम प्रदान करता है, जिससे वे पारंपरिक शिक्षण विधियों की तुलना में अधिक कुशलता से ज्ञान अर्जित कर सकते हैं। NEP 2020 इस शिक्षण पद्धति को प्रभावी रूप से लागू करने के लिए आवश्यक संसाधनों, प्रशिक्षित शिक्षकों और नीति-निर्माण में सुधार की आवश्यकता पर बल देता है, जिससे यह शिक्षा प्रणाली अधिक समावेशी और व्यापक बन सके।

संदर्भ:

1. Art History | Encyclopedia.com
2. Ministry of Human Resource Development (MHRD). (2020). *National Education Policy 2020*. Government of India.
3. Prabhu, B. H., & A, L. (2022). Developing Artistic Sensibilities in Children through Art Integration in Academic Curriculums. *Zenodo (CERN European Organization for Nuclear Research)*. https://doi.org/10.5281/zenodo.7495295
4. Puthenedam, R. (2023). Dance education in the K-12 curriculum: An NEP 2020 perspective with specific reference to Outcomes-based standards. https://doi.org/10.5281/zenodo.7938342
5. Winner, E., Goldstein, T. R., & Vincent-Lancrin, S. (2013). *Art for Art's Sake? The Impact of Arts Education*. OECD Publishing.

6. Hallam, S. (2010). *The Power of Music: Its Impact on the Intellectual, Social and Personal Development of Children and Young People*. International Journal of Music Education.
7. NCERT. (2021). *Guidelines for Inclusive Education in Schools*. National Council of Educational Research and Training. https://dsel.education.gov.in/sites/default/files/guidelines/NGIFEIE_dosel.pdf
8. Puthenedam, R. (2020). Arts education in School curriculum: Present and Future Trends and Issues. *educational policy*, *2020*, 21